B- III
L- 22
M I H

दयानन्द सरस्वती

- 19वीं सदी के उत्तरार्द्ध में भारतीय सुधारकों में दयानंद सरस्वती का भी एक महत्वपूर्ण स्थान है।
- इन्होंने नारा दिया 'वेदों की ओर लौटो'। वैदिक ग्रंथ को आधार बनाते हुए बड़े पैमाने पर सामाजिक धार्मिक सुधारों के लिए कार्य किया।

सामाजिक क्षेत्र में :-

- इन्होंने भी जाति प्रथा एवं छुआछूत की कठोर शब्दों में आलोचना की। समाज को विभाजित करने वाला एवं अमानवीय बताया। इन्होंने वैदिक साहित्य को आधार बनाते हुए वर्ण व्यवस्था का समर्थन किया।
- महिलाओं की दशा - अन्य सुधारकों की तरह महिलाओं में प्रचलित विभिन्न कुरीतियों की भी आलोचना की जैसे - सती प्रथा, बाल-विवाह, विधवाओं की दयनीय दशा इत्यादि।
  इन कुरीतियों का वैदिक साहित्य में भी उल्लेख नहीं मिलता।

KGS IAS KHAN GLOBAL STUDIES Most Trusted Learning Platform KHAN SIR

- आधुनिक समाज के निर्माण एवं विकास के लिए दयानंद सरस्वती भी शिक्षा को आवश्यक मानते थे, महिलाओं के साथ-साथ समाज के सभी वर्गों को शिक्षा उपलब्ध हो, इस विचार के समर्थक थे।

- हालांकि शिक्षा के क्षेत्र में स्वदेशी भाषा में शिक्षा एवं शिक्षा के माध्यम से व्यक्तित्व के विकास के विशेष समर्थक थे (बौद्धिक शारीरिक इत्यादि का विकास)

- इनके अनुयायी शिक्षा को लेकर दो भागों में विभाजित हो गए। एक तरफ स्वामी श्रद्धानंद थे, जिन्होंने हरिद्वार में वैदिक शिक्षा के लिए गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना की। दूसरी तरफ लाला हंस राज, लाला लाजपत राय इत्यादि सुधारक थे जिन्होंने D.A.V* स्कूल, कालेज इत्यादि के माध्यम से वैदिक शिक्षा के साथ-साथ पाश्चात्य शिक्षा को अपनाने पर जोर दिया

DAV → Dayanand Anglo Vedic School

धार्मिक क्षेत्र में :-

- इन्होंने मूर्तिपूजा, बहुदेववाद, पुरोहितवाद, अंधविश्वास, तीर्थयात्रा इत्यादि की कठोर शब्दों में आलोचना की।

KGS IAS KHAN GLOBAL STUDIES KHAN SIR

वैदिक साहित्य में भी इन कुरीतियों का उल्लेख नहीं मिलता है।

- इन्होंने निराकार और सर्वव्यापी ईश्वर की आराधना पर बल दिया। वेदों को अपौरुषेय माना और ज्ञान का सर्वोच्च स्त्रोत भी।
- वैदिक धर्म की श्रेष्ठता में विश्वास करते थे। गाय की रक्षा के लिए इन्होंने गोरक्षिणी समिति बनाई और धर्म परिवर्तित लोगों को हिन्दू धर्म में वापस लाने के लिए शुद्धि आन्दोलन चलाया।
- सामाजिक धार्मिक सुधार के लिए इन्होंने 1875 में बम्बई में आर्य समाज की स्थापना की।
- अपने विचारों के प्रसार के लिए सत्यार्थ प्रकाश, वेद भाष्य, भूमिका, पाखंडखंडिनी पताका इत्यादि पुस्तकों की रचना की।
- इन्होंने स्वदेशी, स्वराज जैसे शब्दों को चर्चा का विषय बनाया।

* वेलेंटाइन चिरोल ने तिलक एवं दयानंद सरस्वती को भारतीय अशांति का जनक कहा है।

हिन्दू सुधार आन्दोलन :-

(i) बंगाल –

राम मोहन राय –

सहयोगी – द्वारका नाथ टैगोर
ताराचन्द्र चक्रवर्ती

ब्रह्म समाज – का नेतृत्व – देवेन्द्रनाथ टैगोर
└संस्था – तत्वबोधिनी सभा
– तत्वबोधिनी पत्रिका

- देवेन्द्रनाथ टैगोर ने केशवचन्द्र सेन को ब्रह्म समाज में शामिल किया।
- केशवचन्द्र सेन ने ब्रह्म समाज का महाराष्ट्र एवं दक्षिण भारत में प्रसार किया। इनके उग्र विचारों के कारण देवेन्द्रनाथ टैगोर से इनका विवाद बढ़ा और 1866 ई० में भारत ब्रह्म समाज नामक संस्था की स्थापना की।
- 1878 में केशवचन्द्र सेन के सहयोगियों ने साधारण ब्रह्म समाज की स्थापना की।
  संस्थापक – आनंद मोहन बोस
  – शिवनाथ शास्त्री

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

राम मोहन राय के समकालीन- हेनरी विवियन डेरेजियो

समाज सुधार के क्षेत्र में इन्हें उग्र विचारो के लिया जाना जाता हैं इनके आन्दोलन को यंग बंगाल आन्दोलन भी कहा जाता है।

- सामाजिक धार्मिक सुधारों के लिए तर्क को अधिक महत्व देते थे इन्होने लोगों को जागरूक करने के लिए डिबेटिंग क्लब, बंग हित सभा, जनरल नालेज के लिए समिति इत्यादि संस्थाओं का गठन किया।

ईश्वर चन्द्र विद्यासागर

शिक्षा के क्षेत्र में :-

- संस्कृत कालेज में गैर ब्राह्मणों को प्रवेश
- बेथून (अंग्रेज) स्कूल के सचिव के पद पर कार्यरत थे और बड़ी संख्या में लड़कियों के लिए स्कूल खोला।
- बांग्ला में व्याकरण सीखने के लिए वर्ण परिचय नामक पुस्तक की रचना।
- सोमप्रकाश नामक अखबार की शुरूआत
- विधवा पुनर्विवाह अधिनियम पारित करने में योगदान

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

राम कृष्ण परमहंस –

कलकत्ता - काली मन्दिर में पुजारी ।
- मानव सेवा - ईश्वर की सेवा ।
विभिन्न धर्मों का सम्मान ।

विवेकानंद (नरेन्द्र) बचपन का नाम ।

- परमहंस के शिष्य ।
- 1893 में शिकागो में भाषण (धर्म संसद में) ।
- 1897 में रामकृष्ण मिशन → समाज सेवा के लिए स्थापना (बेल्लुर - कलकत्ता)

पश्चिम - भारत

- बालशास्त्री जाम्बेकर - दर्पण पत्रिका
- गोपाल हरि देशमुख - लोकहितवादी
- परमहंस मंडली – 1849 - दादोबा पांडुरंग
- विष्णुशास्त्री पंडित - विधवा विवाह समाज (पत्रिका)
- प्रार्थना समाज – आत्माराम पांडुरंग, महादेव गोविंद रनाडे
- राष्ट्रीय सामाजिक सम्मेलन – 1887 - महादेव गोविंद रनाडे

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
KHAN SIR

पंडिता रमाबाई - आर्य महिला समाज
- मुक्ति मिशन

डी के कर्वे - पूना विधवा आश्रम
- 1906 में बाम्बे में महिला विश्वविद्यालय का गठन

दक्षिण भारत

- 1864 - वेद समाज - के. श्रीधरलु नायडु (ब्रह्म समाज का प्रभाव)
- 1878 - राजमुन्द्री सोशल रिफार्म एसोसिएशन
  - वीरेशलिंगम पन्तलु

उत्तर भारत

- आर्य समाज

अन्य - थियोसोफिकल सोसायटी - 1875 - न्यूयार्क

1882 - मद्रास अडयार - { अल्काट / ब्लावत्सकी

* आगे चलकर एनी बेसेंट ने इस सोसायटी को नेतृत्व प्रदान किया।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

सामाजिक धार्मिक आन्दोलन का स्वरूप/प्रकृति

- 19वीं सदी में भारत में अलग-अलग धर्मों में भिन्न-भिन्न समयों पर सामाजिक धार्मिक सुधार के लिए प्रयास आरम्भ किए गए।
- सुधार आन्दोलन को दो धाराओं में विभाजित कर अध्ययन किया जाता है।

सुधारवादी एवं पुनरूत्थानवादी

- सुधार आन्दोलन का उद्देश्य था सामाजिक धार्मिक कुरीतियों को दूर कर आधुनिक समाज का निर्माण, आधुनिक विचारों का प्रसार, अप्रत्यक्ष तौर पर राष्ट्रीय एकता को मजबूत करना।
- सुधारकों ने अपने उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए संगठित तरीके से कार्य किया जैसे संस्थाओं की स्थापना की, एक निश्चित कार्यक्रम और उद्देश्य को लेकर कार्य किया।
- सभी सुधारकों ने सुधारों के लिए लोकतांत्रिक या अहिंसात्मक तरीकों को अपनाया, शिक्षा एवं प्रेस का उपयोग किया, समाज सेवा एवं कानूनों के माध्यम से भी सामाजिक सुधारों के लिए प्रयास किए गए।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

- सामाजिक क्षेत्र में शिक्षा तथा महिलाओं की दशा में सुधार पर विशेष बल दिया गया।
- धार्मिक क्षेत्र में ईश्वर, पुनर्जन्म जैसे मुद्दों के स्थान पर अंधविश्वास, कर्मकाण्ड इत्यादि मुद्दो पर अधिक बल दिया गया।
- सुधारकों ने धार्मिक सहिष्णुता और तर्कबुद्धिवाद को विशेष महत्व दिया।
- प्रारम्भ में सुधार आन्दोलन का दायरा क्षेत्रीय था, लेकिन 19वीं सदी के उत्तरार्द्ध में कुछ आन्दोलन ने अखिल भारतीय स्वरूप ग्रहण किया।
- सुधार आन्दोलन का केन्द्र मुख्यत: शहर थे।
- अधिकांशत: आन्दोलन का संचालन मध्यवर्गीय पृष्ठभूमि के सुधारकों ने किया लेकिन सुधार के केन्द्र में समाज के सभी वर्गों को रखा गया।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
KHAN SIR